जय संतोषी माता | By Tripty Shakya |

जय संतोषी माता, मैया संतोषी माता
अपने सेवक जन की सुख संपत्ति दाता
जय संतोषी माता

सुंदर चीर सुनहरी माँ धारण कियो
हीरा पन्ना दमके तन श्रृंगार लियो
जय संतोषी माता

गेरू लाल छटा छबी, बदन कमल सोहे
मंद हस्त करुणामयी त्रिभुवन मन मोहे
जय संतोषी माता

स्वर्ण सिंहासन बैठी, चंवर धुरे प्यारे
धूप दीप मधुमेवा, भोग धरे न्यारे
जय संतोषी माता

गुड़ और चना परम प्रिय, ता में संतोष किये
संतोषी कहलायी, भक्तन विभव दिये
जय संतोषी माता

शुक्रवार प्रिया मनाती, आज दिवस सोहे
भक्त मंडली छाई, कथा सुनत मोहे
जय संतोषी माता

मंदिर जगमग ज्योति, मंगल ध्वनि छाई
विनय करे हम सेवक, चरणन शिर नाई
जय संतोषी माता

भक्ति भाव में पूजा, अंगीकार कीजै
जो मन बसे हमारे, इच्छित फल दीजै
जय संतोषी माता

दुखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किये
बहु धन धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिये
जय संतोषी माता

ध्यान धरे जन तेरा, मनवांछित फल पायो
पूजा कथा श्रवण कर, घर आनंद आयो
जय संतोषी माता

शरण गए की लज्जा, राखियो जगदंबे
संकट तू ही निवारें, दयामयी अम्बे
जय संतोषी माता

शुक्रवार प्रिया मनाती, आज दिवस सोहे
भक्त मंडली छाई, कथा सुनत मोहे
जय संतोषी माता

संतोषी माँ की आरती, जो कोई जन गावे
ऋद्धि सिद्धि सुख संपत्ति, जी भर के पावे
जय संतोषी माता

जय संतोषी माता, मैया संतोषी माता
अपने सेवक जन की सुख संपत्ति दाता
जय संतोषी माता

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9c%e0%a4%af-%e0%a4%b8%e0%a4%82%e0%a4%a4%e0%a5%8b%e0%a4%b7%e0%a5%80-%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a4%e0%a4%be-by-tripty-shakya/